**ओ३म्**

**‘आर्यसमाज, इसका प्रचार व प्रभाव और भविष्य की आशंकायें’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज एक धार्मिक व सामाजिक संस्था है जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेदों का संसार में प्रचार व प्रसार करती है। वेद ईश्वरीय प्रदत्त ज्ञान होने के कारण सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। इनमें मनुष्यों के कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान है जिसका विस्तार ऋषि प्रणीत वैदिक साहित्य में हुआ है। सृष्टि के आरम्भ से आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत काल तक संसार में धर्म के नाम पर वेद एवं वैदिक परम्परायें ही प्रचलित रही हैं। संसार में जितने भी प्रमुख मत मतान्तर, पन्थ, सम्प्रदाय और मजहब आदि हैं वह सब विगत लगभग दो-तीन हजार वर्षों में अस्तित्व में आयें हैं। इनके अस्तित्व में आने के कारण भी सभी को ज्ञात हैं। सबसे पुराना मत यहूदी वा पारसी मत है जो अपने समय के विद्वान महाशय जरदूश्त ने चलाया था। इनके मत का पुस्तक जन्दावस्ता है। किसी मत का पुस्तक देख कर यह तो जाना ही जा सकता है कि इस मत की स्थापना इस पुस्तक में वर्णित मान्यताओं के आधार पर स्थानीय व अन्य लोगों के हित के लिए की गईं थीं। इससे पूर्व जो विचार व मान्यतायें अथवा परम्परायें प्रचलित रही होंगी उनको निरर्थक व अनावश्यक माना गया होगा। यह भी जानना आवश्यक है कि किसी भी समय में संसार में विद्यमान सभी मनुष्यों की ज्ञान व सामथ्र्य एक समान नहीं हुआ करती। अतः समाज को उन्नत रूप देने के लिए अपने समय के कुछ अधिक ज्ञानी व सामथ्र्यवान व्यक्ति किन्हीं उद्देश्यों के लिए किसी नये मत का प्रचलन आरम्भ करते हैं। संसार में उत्पन्न सभी मनुष्य अल्पज्ञ होते हैं। यह भी तथ्य है कि मनुष्य कितना अधिक ज्ञान क्यों न प्राप्त कर ले, वह तब भी अल्पज्ञ ही रहता है। पूर्ण ज्ञान केवल ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेद ही है। आजकल ज्ञान व विज्ञान उन्नति पर हैं। अनुमान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महाभारत काल के बाद आज के समान वैज्ञानिक व बुद्धिमान व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुए, यदि होते तो संसार का पुराना स्वरूप आज के ही समान उन्नत तब भी होता। अतः उस समय के समाज के स्वरुप व परम्पराओं के आधार पर ही उस समय के मनुष्यों की सोच, ज्ञान की सामथ्र्य, मत व कार्यों का अनुमान लगाया जा सकता है जिसमें धार्मिक मान्यतायें एवं परम्परायें भी सम्मिलित हैं।

 महात्मा जरदूश्त द्वारा प्रचलित मत के अनुयायी पारसी कहे जाते हैं। यह अग्नि पूजक थे। यह अग्निपूजा अग्निहोत्र का बिगड़ा हुआ वा विकृत रूप कहा जा सकता है। इस मत के लोग किन्हीं कारणों व अपने सीमित साधनों के कारण पूरे विश्व में अपनी मान्यताओं वा मत का प्रचार नहीं कर सके। कालान्तर में ईसामसीह जी आये और उन्होंने तत्कालीन देश, काल परिस्थिति व अपनी विद्या के अनुरुप अपने नये मत का प्रचार किया जिसका नाम उन्हीं के नाम पर क्राइस्टया ईसाई मत पड़ा। इसके बाद अरब देश में इस्लाम की स्थापना हुई। ईसाई मत से कई सौ वर्ष पूर्व भारत में भी बौद्ध व जैन मत अस्तित्व में आ चुके थे जो कालान्तर में स्वामी शंकराचार्य के सम्मुख शास्त्रार्थ में पराजित होकर अपना महत्व व प्रभाव खो गये। शंकराचार्य जी के ज्ञान, उनके मत व युक्तियों तथा शास्त्रार्थ में पराजय के कारण उनका प्रभाव न्यूनता को प्राप्त हुआ। नये मत-मतान्तरों के उदय का क्रम भारत से बाहर के देशों में रूका और वहां ईसाई व इस्लाम मत में कुछ भेद होने पर भी वह अनेक कारणों से विस्तार व वृद्धि को प्राप्त होते रहे हैं जिसमें कहीं भय व प्रलोभन तो कहीं हिंसा का सहारा लेकर भी मतों का विस्तार किया गया। इसके विपरीत हम भारत में देखते हैं कि महाभारत काल तक यहां के लोगों का मत वैदिक था। आजकल प्रचलित पुराणों का महाभारत काल व उससे पूर्व नामोनिशां भी नहीं था। महाभारत का युद्ध अतीव हानिकारक व पतनकारी हुआ। देश में राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक सभी व्यवस्थायें कुप्रभावित हुई जिसके कारण अज्ञान फैल गया। इस अज्ञानता ने अधिकांश लोगों को परहित के कार्य करने के स्थान पर स्वार्थी बना दिया। जन्मना जातिवाद अस्तित्व में आया जिसमें एक वर्ग ने अधिकांश अधिकार अपने हाथों में केन्द्रित कर लिये और समय के साथ इसका खुला दुरुपयोग हुआ और इसके नाम पर समाज में अन्याय व शोषण किया गया। इसका जो परिणाम होना था, वही हुआ। देश अन्धविश्वासों व अन्ध परम्पराओं में फंस गया। इसने देश को कमजोर किया जिसका परिणाम गुलामी के रूप में भी सामने आया। यद्यपि लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व देश में स्वामी शंकराचार्य जी का आविर्भाव हुआ था परन्तु उनका जीवन अल्पकालिक होने के कारण उनसे देश व समाज का जो हित हो सकता है वह उनकी मृत्यु की बाधा के कारण पूर्ण न हो सका। भारत से इतर विश्व में मत-मतान्तरों का अन्धकार प्रायः भारत की ही तरह रहा और आज भी है। कोई भी ऐसा मत नहीं है जो अन्धविश्वासों व अज्ञान से युक्त न हो। इसके साथ यूरोप में विज्ञान ने जन्म लिया। कुछ लोगों ने अध्ययन कर सृष्टि में कार्यरत विज्ञान के क्षेत्र में कुछ नियमों को जाना और समय के साथ इनका विस्तार होकर आज का आधुनिक समय आया है जब विज्ञान ही प्रमुख हो गया है। इससे पूर्व ऋषि दयानन्द (1825-1883) ने धार्मिक मतो व पन्थों की जांच-पड़ताल एवं खोज कर ईश्वर प्रदत्त सर्वजनहितकारी सत्य ज्ञान वेदों को हस्तगत कर उनका प्रचार किया और मत-मतान्तरों की अविद्याजन्य असत्य मान्यताओं का खण्डन किया। इन सब से शिक्षित व समझदार लोगों के लिए मध्यकालीन धर्म मत, मजहब, पंथ व सम्प्रदाय आदि गौण हो गये। इस पर भी वर्तमान समय में विश्व में मनुष्यों का बहुत बड़ा वर्ग अपने-अपने मतों की अच्छी व बुरी मान्यताओं वा परम्पराओं को छोड़ने, संशोधित करने व सुधार करने के लिए तत्पर नहीं है जिससे विश्व स्तर पर बहुत से मनुष्यों का जीवन सत्य ज्ञान से रहित होने के कारण दुःखों से पूरित है और विश्व में विचारधाराओं का संघर्ष चल रहा है। इन सब बातों में हम अपने पौराणिक भाईयों को पूणर्तः उदासीन पा रहे हैं। उनकी विगत सहस्राधिक वर्ष से अधिक समय से हानि हो रही है परन्तु अपने अज्ञान व स्वार्थों अथवा अविवेक के कारण वह इसे छोड़ नहीं पा रहे हैं।

 आर्यसमाज असत्य का त्याग कराने व सत्य का ग्रहण करने व करवाने वाला एक निष्पक्ष, पक्षपातरहित धार्मिक एवं सामाजिक आन्दोलन है। वह सभी मनुष्यों को सत्य व इसके प्रतिनिधि वेद से जोड़ता है और विभिन्न मत मतान्तरों की अविद्याजन्य मान्यताओं का प्रकाश व खण्डन करता है जिससे मनुष्य सत्य को जानकर सत्य का ही ग्रहण कर अपने जीवन को उन्नत कर सके। आर्यसमाज का प्रचार और खण्डन एक प्रकार से अविद्या के नाश व विद्या की वृद्धि के लिए मनुष्यों के कर्तव्य स्वरूप कार्य है। हमें यह देखकर सबसे अधिक आश्चर्य होता है कि आज के ज्ञान व विज्ञान के समय में भी असत्य पर आधारित मत-मतान्तर खूब फल-फूल रहे हैं और सत्य मत वेदों का यथोचित प्रचार व ग्रहण नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण तो विश्व के अधिकांश मनुष्यों व इनके प्रतिनिधियों व नेताओं की अविद्या व अविवेक ही है। देश व विदेश में ज्ञान व विज्ञान की उन्नति होने पर भी धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं में सत्य पूर्णरुपेण प्रविष्ट व प्रतिष्ठित नहीं हो पाया है। यह किसी बड़े आश्चर्य से कम नहीं है। इसका एक कारण आर्यसमाज के संगठन व प्रचार प्रसार की शैली में कुछ कमियों का विद्यमान होना भी प्रतीत होता है जिसमें मुख्य कारण इसके अनुयायियों व विद्वानों में अन्य मनुष्यों की भांति अविवेक व ध्येय के प्रति अपेक्षित संकल्प, ज्ञान, लोकैषणा सहित सभी प्रकार के स्वार्थ का त्याग, संगठन में खामियां व पुरुषार्थ की कमी आदि अनुभव होते हैं। यदि यह कुछ कमियां न होती और सभी अनुयायी दुर्बलताओं पर विजय पाकर संगठित एवं पूर्ण समर्पित होकर कार्य करते तो स्थिति को सुधारा व उन्नति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। किसान का बीज अच्छा हो, खेत अच्छा हो व समुचित खाद, पानी व वायुमण्डल मिले तथा किसान भी ज्ञानी व पुरुषार्थी हो तो फसल अवश्य ही अच्छी हुआ करती है। हमारे यहां वातावरण व किसान के पुरुषार्थ में कमी व त्रुटी आदि दृष्टिगोचर होती है। हमें लगता है कि आज आर्यसमाज के विद्वानों को एक स्थान पर एकत्रित होकर वेद प्रचार की सफलता-विफलता विषयक आत्म मंथन करना चाहिये। यद्यपि यह असम्भव कार्य नहीं है परन्तु हमें यह भी असम्भव लगता है। ऐसी स्थिति में हम भविष्य में किसी ठोस उपलब्धि की आशा नहीं कर सकते। भारत की जनसंख्या के आंकड़े भी चेतावनी देते हुए लगते हैं कि भविष्य अच्छा नहीं है। आर्यजाति व आर्यसन्तानों की आनुपातिक जनसंख्या अन्य कुछ सम्प्रदायों की तुलना में कम हो रही है जो भविष्य में एक बड़े संकट की चेतावनी है। अतः हमें जागना होगा और अपने पौराणिक भाईयों को भी जगाना होगा। नही जागेंगे तो वह होगा जो शायद पूर्व इतिहास से भी भयंकर होगा। यदि भारत के सभी हिन्दू ही वैदिक विचारधारा को अपना लें, जो कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारतकाल तक उनके पूर्वजों का धर्म रहा है, तो देश और विश्व के कल्याण की सम्भावना बढ़ सकती है और तब हम सशक्त होकर अपने हितों को सुरक्षित कर सकते हैं। अतः हम आर्यसमाज के सभी विद्वानों और नेताओं को एकजुट होकर वेदों के प्रचार व प्रसार की समस्या का निदान करने की अपील करते हैं। बिना संगठित व समर्पित होकर प्रचार किये बिना हम उन्नति कदापि नहीं कर सकेंगे। आर्यसमाज व इसकी संस्थाओं के उत्सवों पर विद्वानों और भजनोपदेशकों प्रवचन व भजनों को हम आर्यसमाज का बहुत सीमित प्रचार मानते हैं। आर्यसमाज का प्रचार हमें आर्यसमाज से बाहर जाकर जनसामान्य में करना है जो आर्यसमाज व वैदिक धर्म से अपरिचित हैं। यदि हम सब मिलकर अपने-अपने स्वार्थ त्याग कर पुरुषार्थ पूर्वक कार्य करंेगे तो निश्चय ही उन्नति होगी अन्यथा जैसा चल रहा है ऐसा ही चलता रहेगा व भविष्य में इससे भी बदतर होगा, ऐसा हमें लगता है। हम सभी विद्वानों से भी निवेदन करते हैं कि वह इस मानवता के दूरगामी हित को ध्यान में रखकर इस विषय पर चिन्तन कर अपने विचार नैट व अन्य उपलब्ध माध्यमों से परस्पर शेयर करें। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**